Edu Bridge

GRADE
6
MIDDLE STAGE

Teacher's Manual

हिंदी

हिंदी भाग-6

अध्याय 1
निर्माण करो

कविता-बोध

उ०1. (क) नई स्फूर्ति तथा नव प्राण।

(ख) उदास सुमनों में

(ग) विद्यालय का

(घ) नागरिकों को

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०3. नया प्राण है नई बात है,
नई किरण है ज्योति नई।
नई उमंगे नई तरंगे
नई आस है, साँस नई।
युग के मुरझे सुमनो में,
नई-नई मुस्कान भरो।
उठो धरा के अमर सपूतों
पुनः नया निर्माण करो।

उ०4. (क) नई उमंगे नई तरंगे।

(ख) जन-जन के जीवन में फिर से नई स्फूर्ति, नव प्राण भरो।

उ०5. (क) कवि अमर सपूतों से पुनः नया निर्माण करने के लिए कह रहा है।

(ख) धरती माँ के चारों ओर फूल व कलियाँ मुस्करा रही हैं इस प्रकार उनकी काया सुनहरी हो गई।

(ग) नवयुग का आह्वान ज्ञान के शत-शत दीपक जलाकर होगा।

(घ) प्रस्तुत कविता में कवि लोगों को जागरूक करते हुए कहता है कि, उठो जागो और देश के नव-निर्माण में अपना योगदान दो। आपके अच्छे कार्यों और विचारों द्वारा ही देश उन्नति के नवशिखर पर आरूढ़ होता है।

व्याकरण-बोध

उ०1. कली-कली शत-शत नई-नई
फूल-फूल युग-युग

उ०2. (क) देश (ख) नभ (ग) कर
(घ) कली (ङ) बाग

उ०3.

नया	–	पुराना	स्फूर्ति	–	आलस्य
आशा	–	निराशा	ज्ञान	–	अज्ञान
नूतन	–	प्राचीन	रक्षक	–	भक्षक
निर्माण	–	विध्वंस	सपूत	–	कपूत

उ०4. (क) पुनः – किसी बात को पुनः पुनः करना बेकार की बात होती है।
(ख) निर्माण – हमारे घर के पास एक बड़ी इमारत का निर्माण हुआ।
(ग) स्फूर्ति – बच्चों में स्फूर्ति भरपूर होती है।
(घ) सुमन – सुमन बहुत ही सुन्दर लड़की है।
(ङ) किरण – सूरज की किरण चारों ओर प्रकाश फैला देती हैं।
(च) नई – सूरज की रोशनी सब जगह एक नई आशा लाती है।
(छ) युग – युग बदलते हैं परन्तु ईश्वर सदा सच का साथ देते हैं।

अध्याय 2

महात्मा बुद्ध का प्रभाव

पाठ-बोध

उ०1. (क) महात्मा बुद्ध का

(ख) डाकू जिसकी हत्या करता, उसकी अंगुलि काटकर माला में लगाकर पहनता था।

(ग) आदमी, आदमी को क्यों मारता है।

(घ) उन्होंने प्रेम, दया व शांति का उपदेश दिया जिसके कारण डाकू ने हिंसा का त्याग किया।

उ०2. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०3. (क) शिष्य (ख) त्राहि-त्राहि (ग) मन

(घ) महात्मा बुद्ध (ङ) तेज (च) दया

उ०4. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

(घ) सत्य

उ०5. (क) कोशल में राजा प्रसेनजित राज्य किया करते थे। कोशल की राजधानी श्रावस्ती थी।

(ख) कोशल की प्रजा डाकू अंगुलिमाल से पीड़ित थी। इसलिए कोशल नरेश प्रसेनजित भी बड़े दुखी थे।

(ग) उसने एक हजार आदमियों की हत्या करने की प्रतिज्ञा की थी। इसलिए जब भी वह किसी का वध करता था तो उसकी एक अंगुली काट लेता था। अंगुलियों की उसने माला बनाई थी जो हमेशा उसके गले में लटकी रहती थी। इसी कारण उसका नाम अंगुलिमाल डाकू पड़ गया था।

(घ) वे सोच रहे थे, 'आदमी, आदमी को मारता क्यों है? जीव, जीव को देखकर प्रसन्न क्यों नहीं होता?'

(ङ) ऊँचा कद, काला शरीर, भयानक चेहरा, लाल आँखें, बिखरे बाल, बड़ी-बड़ी मूँछें, लंबी मजबूत भुजाएँ, चौड़ा सीना, हाथ में कटार लिए हुए एक व्यक्ति आया।

(च) महात्मा बुद्ध का उस पर इतना प्रभाव पड़ा कि उसने हिंसा का जीवन सदा के लिए त्याग दिया और उनका शिष्य बन गया।

व्याकरण-बोध

उ०1. राजा – रंक शिष्य – गुरु
दुखी – सुखी निश्चय – अनिश्चय
सदैव – कभी-कभी कठोर – कोमल
अंधेरा – रोशनी हिंसा – अहिंसा

उ०2. (क) तेज – घोड़ा तेज दौड़ता है।
तेज़ – ईश्वर के चेहरे पर एक अलग ही तेज़ था।
(ख) राज – राज मेरे छोटे भाई का नाम है।
राज़ – राधा के दिल में बहुत से राज छुपे हैं।
(ग) खुदा – उधर मत जाओ। आगे का सारा रास्त खुदा पड़ा है।
ख़ुदा – ख़ुदा सबको देख रहा है।

उ०3. प्रेम – प्यार समय – वक्त
प्रतिज्ञा – प्रण विश्वास – भरोसा
आदमी – नर दृष्टि – नजर
आँख – नयन चरण – कदम

उ०4. धर्मात्मा – धर्म+आत्मा देवालय – देव+आलय
प्रत्युपकार – प्रति+उपकार महर्षि – महा+ऋषि
महात्मा – महा+आत्मा नरेश – नर+ईश

अध्याय 3

संस्कृति और सभ्यता

पाठ-बोध

उ०1. (क) बाहरी गुण (ख) नहीं (ग) छह विकार

(घ) व्यक्ति के दोषों को कम करना तथा गुणों को बढ़ाना है।

(ङ) महात्मा बुद्ध तथा महावीर जी ने।

उ०2. (क) (ii) (ख) (ii) (ग) (iii)

उ०3. (क) बाहरी (ख) विनय, विनम्रता (ग) विशाल, उदार

(घ) आदान-प्रदान (ङ) उदार

उ०4. (क) सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। संस्कृति मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, दया, माया और परोपकार सीखता है, गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता हासिल करता है।

(ख) एक वह भी समय था, जब आदमी को घर बनाना नहीं आता था; जब वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में वास करता था। जब उसे खेती करना भी नहीं आता था और वह कंद-मूल या जंगली जीवों का गोश्त खाकर गुजारा करता था; जब उसे कपड़ा बुनना भी नहीं आता था; वह या तो नंगा रहता था या पेड़ों की छाल या जानवरों की खाल पहनकर अपनी लाज छिपाता था। इस हालत को मनुष्य की असभ्यता की हालत कहते हैं।

(ग) रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है, उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं।

(घ) अच्छे भोजन का सामान हम सभ्यता के जरिये पैदा करते हैं, लेकिन जिस ढंग से हम भोजन तैयार करते हैं और जिस कला से हम उसे खाते हैं, वह हमारी संस्कृति कहलाती है। संस्कृति धन नहीं, गुण है। संस्कृति ठाठ-बाट नहीं, विनय और विनम्रता है।

(ङ) आदमी के भीतर जो छह विकार (काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर) हैं, वे प्रकृति के दिए हुए हैं। यदि ये विकार बेरोक छोड़ दिए जाएँ तो आदमी इतना गिर जाएगा कि उसमें और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाएगा।

(च) संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है। जब दो देशों या जातियों के लोग आपस में मिलते हैं तब उन दोनों की संस्कृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। एक जाति का धार्मिक रिवाज दूसरी जाति का रिवाज बन जाता है और एक देश की आदत दूसरे देश के लोगों की आदत में समा जाती है।

(छ) भारतीय संस्कृति का जब-जब किसी विदेशी संस्कृति से मिलन हुआ, तब-तब हमारी संस्कृति में एक नई ताजगी आ गई। जब आर्य इस देश में आए और द्रविड़ जाति से मिलकर उन्होंने उस संस्कृति की नींव डाली, जिसे हम हिंदू अथवा भारतीय संस्कृति कहते हैं। जब यह संस्कृति कुछ पुरानी हो गई और उसके खिलाफ महात्मा बुद्ध और महावीर ने विद्रोह किया जिसके फलस्वरूप बहुत-सी रूढ़ियाँ दूर हुईं और यह संस्कृति एक बार फिर से नवीन हो गई। जब इस देश में मुसलमान आए और हिंदू-धर्म का इस्लाम से संबंध हुआ। जब भारत की मिट्टी पर हिंदुत्व और इस्लाम, दोनों का संबंध ईसाई धर्म और यूरोप के विज्ञान और बुद्धिवाद से हुआ।

व्याकरण-बोध

उ०1. सभ्य – असभ्य उन्नति – अवनति
गुण – अवगुण निर्माण – विध्वंस
पशुता – मानवता घृणा – प्रेम

उ०2. अभिराम अभिकरण
अभिकर्ता अभिनव

उ०3. खुदा खुशबू आसमां
गम रूह

उ०4. (क) उन्नति – उन्नति करना सबका सपना होता है।
(ख) सभ्य – सभ्य परिवार सभ्य समाज की रूपरेखा होता है।
(ग) सूक्ष्म – समाज सूक्ष्म से सूक्ष्म गलतियों को भी नजरअंदाज नहीं करता।
(घ) दोष – हमें अपने दोष दूर करने का प्रयास करना चाहिए।
(ङ) संस्कृति – हमारी संस्कृति हमारी धरोहर है।
(च) गुण – गुणों से ही हमारी पहचान है।
(छ) आदर – बड़ों का आदर करना सबसे महत्वपूर्ण गुण है।

अध्याय 4

काले बादल

पाठ-बोध

उ०1. (क) सुमित्रानंदन पंत।

(ख) चाँदी की रेखा अर्थात चमकती बिजली।

(ग) नाचकर गा रहे हैं।

(घ) प्रेम तथा विश्वास।

उ०2. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (ii)

उ०3. कवि कहते हैं कि उन्हें मृत्यु से डर नहीं है। वे अच्छी नीतियों का समर्थन करते हैं। वे उन रीतियों को मानते हैं जो मनुष्य हित में हैं। परन्तु आज मनुष्य में ही आपस में प्रेम, विश्वास नहीं है।

कवि कहते हैं कि मनुष्य को जातीय भेद-भाव में नहीं पड़ना चाहिए बल्कि सबको मानवता से प्रेम करना चाहिए क्योंकि ये मानवता ही सबको बनाती है। द्वेष के इस समाज में प्रेम की रेखा बनानी चाहिए।

उ०4. (क) काले बादल में चाँदी की रेखा का अर्थ चमकती बिजली है।

(ख) कवि का काले बादलों से अभिप्राय द्वेष है।

(ग) कवि द्वेष व कलेश से घृणा करते हैं।

(घ) कवि के मन में डर की चंचलता कार्य कर रही है।

(ङ) कवि ने निराशा में से आशा की किरण के लिए कहा है कि उन्हें बुरी नीति से प्रीति नहीं है।

व्याकरण-बोध

उ०1.

बादल – वारिद	मेघ	घन
क्लेश – लड़ाई	संताप	मंत्रणा
नभ – आकाश	गगन	अंबर
चपला – बिजली	वर्तिका	विद्युत

उ०2. (क) चाँदी – चाँदी एक धातु है।

मेरी माँ के गहने चाँदी से चमकते हैं।

(ख) चपला – आधुनिक युग में चपला अति आवश्यक है।
चपलायुक्त यंत्र आज के युग की जरूरत है।

(ग) विधि – हवन में सभी कार्य विधि-विधान से होने चाहिए।
मेरी सहेली का नाम विधि है।

(घ) झिल्ली – बतख के पैर झिल्लीयुक्त होते हैं।
मकड़ी का जाल एक झिल्लीनुमा होता है।

अध्याय 5

अब्राहम की सच्ची लगन

पाठ-बोध

उ०1. (क) अब्राहम (ख) दृढ़ता
(ग) पढ़ाई के लिए
(घ) नहीं, क्योंकि संघर्ष से ही सफलता मिलती है।

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०3. (क) दृढ़ता, प्रभावित (ख) अब्राहम, अखबार
(ग) पचास अखबार (घ) ईमानदारी
(ङ) चकित

उ०4. (क) ईश्वर उसी की मदद करते हैं जो स्वयं की मदद करता है अर्थात जो व्यक्ति संकटों से बिना घबराए निरंतर मेहनत से कार्य करता है, ईश्वर भी उसकी मदद करते हैं।
(ख) कभी-कभी विपदा इतनी अकस्मात् और दबे पाँव आती है कि आहट तक नहीं होती। एक बार अखबार-विक्रेता मालिक की दुकान व उससे लगे घर में आग लग गई। न सिर्फ सब कुछ जलकर भस्म हो गया बल्कि आग की चपेट में झुलसकर मालिक भी चल बसा।

उ०5. (क) बालक ने अखबार वाले से याचना की थी कि क्या वे उसे घूम-घूमकर अखबार बेचने के लिए कुछ अखबार देंगे।
(ख) बालक ने पूरे दिन में पचास अखबार बेचे सारे पैसे अखबार-विक्रेता को दे दिये। इस प्रकार अखबार-विक्रेता उससे प्रभावित हुआ।
(ग) एक बार अखबार-विक्रेता मालिक की दुकान व उससे लगे घर में आग लग गई। न सिर्फ सब कुछ जलकर भस्म हो गया बल्कि आग की चपेट में झुलसकर मालिक भी चल बसा। इसके साथ ही उसका स्कूल में दाखिला लेने का सपना भी चकनाचूर हो गया।
(घ) भगवान उसकी मदद करता है जो अपनी मदद आप करता है।
(ङ) वह बालक था– अब्राहम लिंकन, अमेरिका का प्रसिद्ध राष्ट्रपति, जिसे अमेरिकावासी अपना 'राष्ट्रपिता' कहते हैं।

व्याकरण-बोध

उ०1. घरवाला – वाला साप्ताहिक – इक
उपयोगी – ई बुद्धिमान – मान
श्रमिक – इक दयालुता – ता
उदारता – ता स्तंभित – इत
सजीवता – ता ईमानदारी – दारी

उ०2. (क) पड़ी (ख) कर लिया (ग) रखवा देता था
(घ) बचा (ङ) कर दिया

उ०3. (क) नहीं (ख) मत (ग) नहीं करता
(घ) नहीं (ङ) नहीं

उ०4.

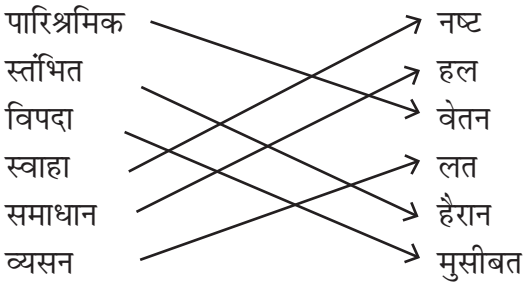

उ०5. (क) उसे अपना भविष्य अंधकारमय नजर आ रहा था।
(ख) क्या हिम्मत हारने से कभी किसी की समस्या का समाधान हुआ है?
(ग) जानते हो, यह अब्राहम लिंकन कौन था?
(घ) एक कारखाने में भट्टी में कोयला झोंकने का काम था।
(ङ) मालिक के घर तथा उससे लगी दुकान में भी आग लग गई।

उ०6. (क) याचना – बच्चे ईश्वर से शुद्ध बुद्धि की याचना करते हैं।
(ख) ईमानदारी – ईमानदारी हमारा गुण होता है।
(ग) पालन – माता-पिता बच्चों का पालन-पोषण बड़े प्रेम से करते हैं।
(घ) योग्यता – हमारी योग्यता हमारी मेहनत पर निर्भर करती है।

अध्याय 6
उन्नति का मार्ग

पाठ-बोध

उ०1. (क) स्व+अवलंबन, जिसका अर्थ है– अपना सहारा।

(ख) अब्राहम लिंकन, मैक्डोनल, डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम, लाल बहादुर शास्त्री आदि।

(ग) स्वामी विवेकानन्द, सरदार पटेल, ईश्वर चंद विद्यासागर आदि।

उ०2. (क) (i) (ख) (ii)

उ०3. (क) स्व, अवलंबन (ख) आत्मनिर्भरता (ग) विद्यार्थी

(घ) अमेरिका (ङ) जीवन

उ०4. (क) जो व्यक्ति समाज में अपने सारे कार्य अपने आप करता है वह आवश्यकता पड़ने पर ही दूसरों की सहायता लेता है और उसी प्रकार दूसरों को भी सहायता देता है, वह व्यक्ति उन्नति की दौड़ में कभी पीछे नहीं रह सकता।

(ख) स्वावलंबी व्यक्ति परिश्रम के कारण शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ होता है। लक्ष्मी उसके घर में निवास करती हैं, इसलिए उसके पास धन की कमी नहीं रहती। वह अपने ही बाहुबल से सारी सुख-सुविधाओं को जुटाने में सक्षम होता है। दूसरों को सहयोग देने के कारण समाज में यश अर्जित करता है। स्वावलंबी पुरुष चहुँ ओर से उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता है।

(ग) विद्यार्थी-जीवन मानव-जीवन की प्राथमिक अवस्था है। विद्यार्थी-जीवन में उसकी जैसी नींव पड़ जाती है, उसी पर उसका सारा जीवन अवलंबित होता है। इसलिए एक विद्यार्थी को अपने सारे कार्य अपने आप करने चाहिए।

(घ) विद्यार्थियों में दूसरों पर निर्भर रहने की आदत नहीं होनी चाहिए। अपने कपड़े स्वयं ही धोने चाहिए। अपने शरीर व पढ़ाई-संबंधी कार्यों के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। बड़े विद्यार्थियों को विद्या-अध्ययन के साथ धन अर्जित करने के साधन भी

जुटाने चाहिए, ताकि समय-समय पर माता-पिता के भार को हल्का कर सकें। अपने विद्यालय के कार्यों को किसी दूसरे छात्र द्वारा नहीं कराना चाहिए।

(ङ) मैं इस कथन से सहमत हूँ कि यदि सभी विद्यार्थी स्वावलंबन की शिक्षा पर आचरण करें, तो वे जीवन में किसी भी क्षेत्र में असफल नहीं हो सकते हैं।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) वह मेरे समक्ष खड़ा है।

(ख) अंकित निर्बल व्यक्ति की तरह खड़ा है।

(ग) मेरे पिताजी दूरदर्शी हैं।

(घ) माँ की ममता संवेदनशील होती है।

(ङ) मेरा भाई लघुभाषी है।

(च) मेरी माँ बहुत आस्तिक है।

उ०2. अत्यावश्यक = अति + आवश्यक

परोपकार = पर + उपकार

पराश्रित = पर + आश्रित

विद्यार्थी = विद्या + अर्थी

मतानुसार = मत + अनुसार

कवि = कवि + ईश

अध्याय 7

अध्ययन

पाठ-बोध

उ०1. (क) अध्ययन (ख) रामचंद्र शुक्ल

(ग) विद्‌वान तथा प्रतिभाशाली पुरुषों के

(घ) भूतकाल का

उ०2. (क) (iii) (ख) (i)

उ०3. (क) ऐसा इसलिए क्योंकि जो सुख सुविधायें उन्हें प्राप्त नहीं थीं वे आज के मानव ने कई संघर्षों के बाद अपने लिए निश्चित कर ली हैं।

(ख) जब मनुष्य अपने को दूसरे से अधिक बलशाली समझता है तो अपने बल का दिखावा करने लगता है जिससे वह युद्‌ध की नीति को अपनाता है और स्वयं ही अपने लोगों व अपने समाज का पतन करने लगता है।

उ०4. (क) कवि गिरधर ने हमें चेतावनी दी है कि बिना विचारे किया गया कार्य अक्सर पछतावा देता है। ऐसा कार्य करने पर हमारे कार्य तो बिगड़ते ही हैं, साथ ही साथ हम भी हँसी के पात्र बनते हैं।

(ख) हमें पढ़ाई का चस्का लगाना चाहिए क्योंकि यह चस्का हमें जीवन में सहारा व आनन्द देता है। हमारे दिन कितने भी बुरे हो यह चस्का सदैव साथ निभाता है।

(ग) पढ़ने का बड़ा भारी, अलभ्य और मनोहारी लाभ यह है कि उससे चित्त भावनाओं और प्रौढ़ विचारों से पूर्ण हो जाता है। जब कभी भी चाहे मनुष्य चुपचाप बैठ जाए और जो कुछ उसने पढ़ा है उसका चिंतन करता हुआ उपयोगी और आनंदप्रद विचारों की धारा में मग्न हो जाए। इसके लिए उसे किसी प्रकार के बाहरी आधार की आवश्यकता नहीं।

व्याकरण-बोध

उ०1. गीरधर = गिरधर
अधययन = अध्ययन
पराकरम = पराक्रम
कूंडली = कुंडली
चश्का = चस्का
अपेछा = अपेक्षा
ऊपयोगी = उपयोगी
अनविछण = अन्वेक्षण

उ०2. ज्ञान = अज्ञान
जीवन = मरण
अभाव = प्रचुरता
मृत्यु = जीवन
धर्म = अधर्म
प्रसन्न = अप्रसन्न
अंधकार = रोशनी
लघु = दीर्घ

उ०3. (क) ज्ञान = ज्ञान हर समस्या का समाधान ढूँढ़ लेता है।
विज्ञान = विज्ञान आधुनिक जीवन का आधार है।
(ख) अपेक्षा = हमें माता-पिता की अपेक्षाएँ पूरी करनी चाहिए।
उपेक्षा = हमें किसी की उपेक्षा करने का कोई अधिकार नहीं है।
(ग) आदि = हमें पेड़ों से फल, फूल, आदि प्राप्त होते हैं।
आदी = राहुल बुरी संगत का आदी है।

अध्याय 8

अब जागो जीवन के प्रभात!

पाठ-बोध

उ०1. (क) जयशंकर प्रसाद।

(ख) मलय पर्वत से आने वाली हवाएँ।

उ०2. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (iii)

उ०3. कवि निराशा से भरे लोगों को जगाना चाहते हैं। वे कहते हैं कि अब रात रूपी निराशा का अंधेरा मिट चुका है, सूर्य रूपी आशा का उदय हो चुका है, चारों ओर पक्षियों की चहचहाहट गूँज रही है और हवाएँ चल रही हैं। अब तो हे मानव उठो, जीवन के नए प्रभात से नई शुरूआत करो।

उ०4. (क) जागो जीवन के प्रभात से कवि का तात्पर्य है कि जो निराश व्यक्ति हैं, वे अपने जीवन में आशा भरकर नए जीवन की शुरूआत करें।

(ख) कवि ने हिमकणों की तुलना ओस से की है।

(ग) प्रात: होते ही नयनरूपी तारकगण किरणदल में छिप जाते हैं।

(घ) कवि चाहते हैं कि चारों ओर पक्षियों की चहचहाहट हो और ठंडी पवन चले।

उ०5. (क) सूर्योदय के समय सूरज की किरणें सारे अंधकार को नष्ट करके चारों ओर सूर्य का प्रकाश फैला देती हैं। चारों ओर पक्षियों की चहचहाने की आवाजें आती हैं। घर में ओस की बूँदें पड़ी रहती हैं। ठंडी हवाएँ चलती हैं।

(ख) कवि ने हिमकणों की तुलना ओस से की है।

(ग) प्रात: होते ही नयनरूपी तारकगण किरण दल में छिप जाते हैं।

(घ) कवि चाहते हैं कि चारों ओर पत्तियों की यह चह-चहाहट हो और ठंडी पवन चले।

व्याकरण-बोध

उ०1. प्रदान — प्रमाद
प्रगति — प्रबल
प्रयत्न — प्रयोग
प्रलेप — प्रकाश

उ०2. निखरे — लात
कब — लपेटो

उ०3. नयन = नेत्र, आँख — लाज = लज्जा, शर्म
आँसू = अश्रु, नेत्रजल — गात = तन, देह
प्रभात = सवेरा, सुबह — अरुण = दिनकर, भास्कर

उ०4. सुखद = दुखद — रजनी = दिवा
क्षोभ = शान्ति — वसुधा = आकाश
प्रभात = सायं — जीवन = मरण

उ०5. प्रभात = सुबह — क्षोभ = आवेश
कलरव = पक्षियों की मधुर वाणी — गात = तन
वसुधा = धरा — हिमकण = ओस की बूँदें

उ०6. पृभात = प्रभात — वसूधा = वसुधा
आसू = आँसू — अरूण = अरुण
कीरण = किरण — रजनि = रजनी
औस = ओस — जिवन = जीवन

उ०7. (क) आँसू – हमें बात-बात में आँसू नहीं बहाना चाहिए।
(ख) कण – कण-कण में ईश्वर बसते हैं।
(ग) गत – हमें अपनी गात को फूल सा कोमल नहीं बनाना चाहिए।
(घ) लाज – लाज स्त्री का शृंगार होती है।
(ङ) आँचल – माँ के आँचल में बच्चों के लिए प्रेम ही होता है।

अध्याय 9

गिल्लू

पाठ-बोध

उ०1. (क) गिल्लू (गिलहरी का बच्चा)।

(ख) इसे मुक्त करना आवश्यक है।

(ग) वह खिड़की से बाहर जाता और सायं 4 बजे तक वापिस अपने घर में आ जाता।

(घ) वह पर्दे पर तेजी से उतरता और चढ़ता था।

उ०2. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i)

उ०3. (क) निश्चेष्ट, गमले (ख) गिल्लू (ग) गिल्लू, प्रथम

(घ) गिल्लू (ङ) गिलहरियों, अवधि

उ०4. (क) गिलहरी के छोटे बच्चे को लेखिका कौए से बचाया।

(ख) गिल्लू लिफाफे से बाहर भूख लगने पर आता था।

(ग) लेखिका ने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया। वही दो वर्ष तक गिल्लू का घर रहा।

(घ) गिल्लू का प्रिय भोजन काजू था।

(ङ) लेखिका ने गिल्लू को थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता।

(च) जीवन के अंतिम क्षणों में गिल्लू ने दिन भर कुछ न खाया, न बाहर गया। रात में, अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर लेखिका के बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से उनकी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था और प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही किसी और जीवन में जागने के लिए वह सो गया।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) तेज – परिमाणवाचक क्रिया विशेषण
(ख) दोपहर में – कालवाचक क्रिया विशेषण
(ग) दिन भर – कालवाचक क्रिया विशेषण
(घ) रात में – कालवाचक क्रिया विशेषण

उ०2.

	उद्देश्य	विधेय
(क)	गिलहरियों के जीवन की अवधि	दो वर्ष से अधिक नहीं होती।
(ख)	वह	स्वयं को हिलाकर अपने घर में झूला झूलता।
(ग)	मैंने	कीलें निकालकर जाली का कोना खोल दिया।
(घ)	मेरे पास बहुत-से पशु-पक्षी हैं	और उनसे मुझे लगाव भी कम नहीं।
(ङ)	हम	उसे गिल्लू कहकर पुकारने लगे।
(च)	लेखिका को	कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा।

उ०3.

सुबह	= प्रभात	सवेरे	काम	= कार्य	कृत्य
प्रेम	= प्यार	स्नेह	रात	= रजनी	निशा
आँख	= नयन	नेत्र	घर	= गृह	सदन
शरीर	= तन	काया	किरण	= रश्मि	प्रभा

उ०4. इधर-उधर निश्चेष्ट-सा
छोटे-से हौले-हौले

उ०5.

आश्चर्य	= हैरान	आश्वस्त	= निश्चिंत
गात	= तन	प्रिय	= प्यारा
उष्णता	= गर्मी	प्रयत्न	= प्रयास
अस्वस्थता	= बीमार	संभवत:	= शायद
स्निग्ध	= चिकना	मरणासन्न	= मरने जैसी अवस्था

उ०6. निश्चेष्ट = हल–चल   मुक्त = बंधन
आवश्यकता= अनावश्यकता   सुलभ = दुर्लभ
घृणा = प्रेम   जीवन = मरण
उष्ण = शीत   संध्या = प्रभात
नन्हा = बड़ा   समीप = दूर
कठिनाई = आसानी   प्रथम = अंतिम
प्रिय = अप्रिय   पतली = मोटी

उ०7. निकट = मेरे घर से मेरा विद्यालय निकट है।
उपरांत = घर आने के उपरांत मैं सबसे पहले गृहकार्य करती हूँ।
स्वयं = हमें अपना कार्य स्वयं करना चाहिए।
आश्चर्य = इन्द्रधनुष देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गई।

अध्याय 10

प्रेमचंद के फटे जूते

पाठ-बोध

उ०1. (क) सादगी, वास्तविकता

(ख) यहाँ पर्दे का अर्थ बाहरी दिखावा है लेकिन प्रेमचंद जी बाहरी दिखावे पर विश्वास नहीं करते थे।

उ०2. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (i)

उ०3. (क) चित्र, पत्नी (ख) दृष्टि (ग) महत्व

(घ) फटता, घिस (ङ) ठोकर

उ०5. (क) सिर पर किसी मोटे कपड़े की टोपी, कुर्ता और धोती पहने हैं। कनपटी चिपकी है, गालों की हड्डियाँ उभर आई हैं, पर घनी मूँछें चेहरे को भरा-भरा बतलाती हैं। पाँवों में केनवस के जूते हैं, जिनके बंद बेतरतीब बँधे हैं। लापरवाही से उपयोग करने पर बंद के छोरों पर लगी लोहे की पतरी निकल जाती है और छेदों में बंद डालने में परेशानी होती है। तब बंद कैसे भी कस लिए जाते हैं।

(ख) फोटो की महत्ता के विषय में लेखक ने बताते हुए कहा है कि लोग तो किसी से फोटो खिंचाने के लिए जूते माँग लेते हैं। लोग तो माँगे के कोट से वर-दिखाई करते हैं और माँगे की मोटर से बारात निकालते हैं। फोटो खिंचाने के लिए तो बीवी तक माँग ली जाती है, लोग तो इत्र चुपड़कर फोटो खिंचाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए! गंदे-से-गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है।

(ग) लेखक के अनुसार प्रेमचंद की व्यंग्य मुस्कान उसके हौसले पस्त करती है क्योंकि फटा जूता भी प्रेमचंद ने ठाठ से पहना है।

(घ) लेखक के अनुसार प्रेमचन्द जरूर किसी सख्त चीज को ठोकर मारते होंगे।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) उप = उपकार
कभी किसी का उपकार नहीं लेना चाहिए।

(ख) प्र = प्रकाश
सूर्य का प्रकाश चारों ओर फैला है।

(ग) अधि = अधिकांश
मेरे विद्यालय में अधिकांश अध्यापक महिलाएं हैं।

(घ) अभि = अभिनव
मेरे मित्र का नाम अभिनव है।

(ङ) निर् = निर्दोष
मेरा भाई निर्दोष है।

(च) दुर् = दुर्व्यवहार
किसी के साथ दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए।

उ०2. पचास कंजूस बीमार
छोटा चार मीटर

उ०3. (क) पोशाक = वस्त्र
दीपावली के लिए महँगी पोशाक ली है।

(ख) अहसान = उपकार
देनदार ने राधा की माँ पर कई बार उधार माल देकर अहसान किया है।

(ग) परंपरा = रीति-रिवाज
शादी में बहुत सी परंपरा निभानी पड़ती है।

(घ) उपहास = मजाक
हमें किसी का मजाक नहीं बनाना चाहिए।

(ङ) विडंबना = परिस्थिति
जीवन में कई प्रकार की विडंबना आती है।

उ०4. (क) से (ख) का (ग) का
(घ) से (ङ) की

उ०5. विश्वास = अविश्वास
उपयोग = अनुपयोगी
ठीक = गलत
बाएँ = दाएँ

उ०6. पत्नि = पत्नी
साहितयिक = साहित्यिक
व्यंगय = व्यंग्य
समझोता = समझौता

डूबना = उभरना
खुशबू = बदबू
गुण = अवगुण
आग्रह = अनाग्रह
चैहरा = चेहरा
परँपरा = परम्परा
ईशारा = इशारा
घ्रणित = घृणित

अध्याय 11
सत्य और अहिंसा

पाठ-बोध

उ०1. (क) सत्य एवं अहिंसा के विषय में।

(ख) सत्य के बिना।

(ग) शाश्वत धर्म का।

(घ) सत्य ही परमेश्वर है।

उ०2. (क) (ii) (ख) (ii) (ग) (i)

उ०3. (क) प्रवृत्ति, श्वासोच्छ्वास (ख) आराधना

(ग) क्षणभंगुर (घ) अहिंसा, दृष्टि (ङ) परमेश्वर

उ०4. सत्य जीवन का ऐसा पथ है जिस पर चलने के लिए हिम्मत व बलिदान दोनों की आवश्यकता होती है। इस मार्ग पर चलने वालों के लिए जरूरी है कि उनके मार्ग में जितने भी संकट आयें, उनकी चाहे जितनी भी हार हो उनको सत्य का पथ नहीं छोड़ना चाहिए। विश्वास के साथ यही मंत्र जपना चाहिए कि सत्य ही सब कुछ है। वही परमेश्वर है। परमेवश्वर को प्राप्त करने का एक ही मार्ग है वो है– सत्य पर अडिग होकर चलना, अहिंसा को अपनाना।

उ०5. (क) हमारा श्वासोच्छ्वास सत्य के लिए होना चाहिए।

(ख) गाँधी जी की दृष्टि में सत्य का अर्थ विचार, वाणी और आचार में सत्य का होना ही सत्य है। उसमें जो न समाए वह सत्य नहीं है, ज्ञान नहीं है।

(ग) सत्य की खोज के लिए आवश्यक तपश्चर्या अर्थात् आत्मकष्ट सहन की बात तथा उसके पीछे मर मिटना होता है। अतः उसमें स्वार्थ की गंध तक भी नहीं होती।

(घ) अहिंसा के मार्ग में उत्तरोत्तर दुख उठाने की ही बात आती है,

अटूट धैर्य-शिक्षा की बात आती है। यदि यह हो जाए तो अंत में चोर साहूकार बन जाता है और हमें सत्य के अधिक स्पष्ट दर्शन होते हैं। ऐसा करते हुए हम जगत को मित्र बनाना सीखते हैं।

(ङ) मिथ्या-भाषण हिंसा है। द्वेष हिंसा है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है। जगत के लिए जो आवश्यक वस्तु है, उस पर कब्जा रखना भी हिंसा है।

(च) हमें विश्वास न छोड़कर एक ही मंत्र जपना चाहिए– सत्य है, वही है, वही एक परमेश्वर है। उसके साक्षात्कार का एक ही मार्ग है, एक ही साधन अहिंसा है, उसे कभी न छोड़ेंगे।

व्याकरण-बोध

उ०2. (क) अत्याचारी तैमूरलंग ने भारत पर कई बार आक्रमण किया है।
(ख) एक बार तैमूर तुरक भी आया था।
(ग) धीरे-धीरे पर्दा गिरेगा।

उ०3. (क) भविष्यत् काल (ख) वर्तमान काल
(ग) भविष्यत् काल (घ) भविष्यत् काल
(ङ) वर्तमान काल (च) भूतकाल

उ०6. (क) वैराग्य = साधु-संत वैराग्य का जीवन जीते हैं।
(ख) अस्तित्व = प्रभु के बिना भक्तों का कोई अस्तित्व नहीं है।
(ग) आचार = उच्च लोगों का आचार सादा होता है।
(घ) जिज्ञासु = जिज्ञासु बच्चे सब कुछ जानने की इच्छा रखते हैं।
(ङ) उपद्रव = शरारती बच्चों ने कक्षा में उपद्रव मचा रखा है।
(च) मिथ्या = मिथ्या बात बोलने से हमारा व्यवहार अच्छा नहीं रहता।

- नीचे दिये गए संकेतों के आधार पर वर्ग-पहेली हल कीजिए–

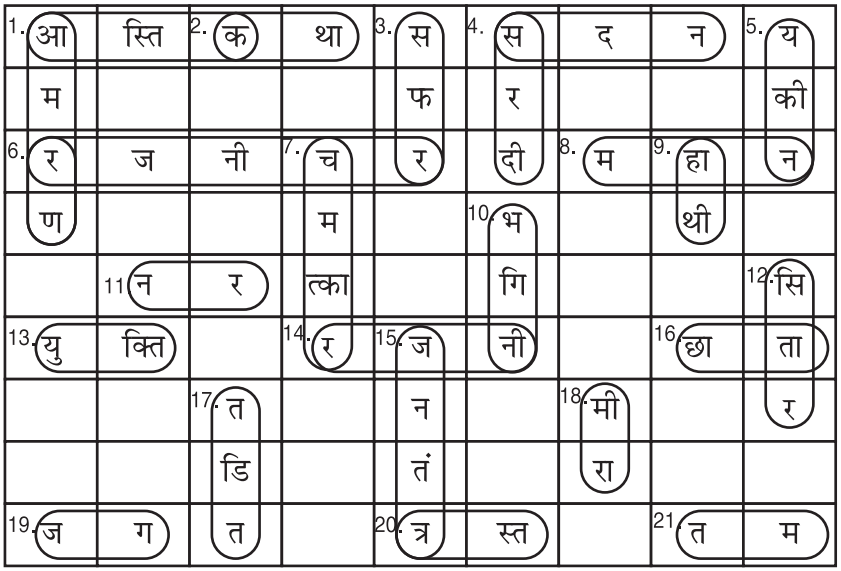

बाएँ से दाएँ

1. ईश्वर में आस्था रखने वाला
3. जहाँ मंत्री काम करते हैं/संसद
6. रात में विचरण करने वाला
8. क्षुद्र का विलोम
13. तरकीब
14. निशा का पर्याय
16. इसे बरसात में प्रयोग करते हैं
19. संसार
20. भयभीत/दुखी
21. अंधकार

ऊपर से नीचे

1. मृत्यु तक
2. कही हुई बात
3. यात्रा
4. बहुत दिनों तक
5. विश्वास, भरोसा
6. युद्ध का पर्याय
7. जादू/करामात का पर्याय
9. हस्ति का तद्भव/गज का पर्याय
10. बहन का पर्याय/तत्सम
11. आदमी
12. एक प्रकार का वाद्य
15. लोकतंत्र के लिए अन्य शब्द
17. बिजली का पर्याय
18. एक कृष्णभक्त कवयित्री

अध्याय 12
पोंगल का त्योहार

पाठ-बोध

उ०1. (क) धान की फसल कटने के बाद।
(ख) सूर्य का उत्तर दिशा में गमन।
(ग) सूर्य की ऊष्मा और प्रकाश से ही फसलें पैदा होती हैं।

उ०2. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (i)

उ०3. (क) बड़ा पोंगल (ख) सूर्य देवता (ग) ऊष्मा, फसलें

उ०4. (क) पोंगल के पहले और बाद के दिन का भी बड़ा महत्व है। पहले वाले दिन को 'भोगी' कहते हैं।

(ख) 'भोगी' ऋतुओं के राजा इंद्र को समर्पित है।

(ग) इस दिन घर के मुख्य द्वार के बाहर बहुत बड़ा और अलंकृत 'कोलम' बनाया जाता है। पोंगल के दिन इसलिए सूर्य देवता की पूजा-अर्चना की जाती है। सूर्य देवता को 'शर्करइ' का भोग लगाया जाता है। पोंगल के दिन लोग विशेष रूप से एक बर्तन खरीदकर लाते हैं और उसमें दूध डालते हैं। जब दूध उबलने लगता है तो उसमें नई फसल का थोड़ा चावल और गुड़ छोड़ते हैं। अंत में मसाले आदि डालकर पकाया जाता है। बर्तन के मुँह पर हल्दी का पौधा बाँधा जाता है। तमिलनाडु में हल्दी को बड़ा पवित्र माना जाता है।

(घ) 'शर्करइ' का प्रसाद बाँटा जाता है। साथ ही ईख काट-काटकर गंडेरिया बनाकर सबको दी जाती है।

(ङ) इस दिन पशुओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट की जाती है। सभी अपने पालतू पशुओं की पूजा कर उन्हें भोग लगाते हैं। उनके मस्तक पर हल्दी, कुमकुम लगाकर उनके गले में पुष्पहार डाला जाता है। बैलगाड़ियों, हलों और खेती के औजारों-हथियारों पर रंग-रोगन किया जाता है। बैलों के सींगों को घिस-घिसकर नोकदार बनाया जाता है और उन नोकों को धातु के छल्ले पहनाए जाते हैं। लोग अपने-अपने खेतों के बीच गणेश बनाकर उन्हें दूब और फूलों से सजाते हैं तथा हल्दी, ईख और अदरक से उनकी पूजा करते हैं।

(च) इस दिन बैलों के मालिक उन्हें खूब सजाते हैं। उनके गले में मोतियों की माला और घंटियाँ बाँध दी जाती हैं। एक कपड़े में रुपये बाँधकर उसे रंग-बिरंगे सींगों वाले बैल के गले में बाँध दिया जाता है। बैल गलियों में दौड़ने लगते हैं। जवान और साहसी युवक इन बैलों को काबू में करने की कोशिश करते हैं। जो कोई ऐसा करने में सफल हो जाता है, पोटली में बँधे रुपये उसी के हो जाते हैं। कुछ बैल बड़े क्रोधी और अड़ियल भी होते हैं। वे किसी को भी अपनी पीठ पर सवार नहीं होने देते। यदि कोई उनके गले का हार उतारना भी चाहता है, तो वह भड़क उठते हैं। कुछ लोग इस खेल में बुरी तरह घायल भी हो जाते हैं।

व्याकरण-बोध

उ०1. त्योहार = पर्व, उत्सव रात = निशा, राशि
दिन = दिवस, वार सूर्य = भानू, रवि

उ०2. फसल = फसल आशीवाद = आशीर्वाद
विधीवत = विधिवत साश्टांग = साष्टांग
रोमानचक = रोमांचक किरतज्ञता = कृतज्ञता

अध्याय 13

छोटा जादूगर

पाठ-बोध

उ०1. (क) कार्निवाल के मैदान में।

(ख) उसकी माँ तथा बाबू जी।

(ग) जेल में।

उ०2. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०3. (क) बिजली (ख) निकम्मा (ग) दीर्घ नि:श्वास

(घ) माँ (ङ) साधन

उ०4. (क) छोटे जादूगर की बातों में बनावट नहीं थी अपितु कमाले की दृढ़ निश्चितता थी।

(ख) जब लेखक ने कमाने की जरूरत के बारे में पूछा तो वह तिरस्कार की हँसी दिखाने लगा क्योंकि कमाना उसकी जरूरत थी न कि शौक।

(ग) जब लेखक ने देखा कि छोटू जादूगर की माँ ने उसका साथ छोड़ दिया अर्थात मृत्यु को प्राप्त हो गई तो लेखक को उस उज्जवल धूप में सारा संसार उसके चारों नृत्य करता नजर आने लगा।

(घ) जब लेखक ने कमाने की जरूरत के बारे में पूछा तो वह तिरस्कार की हँसी दिखाने लगा क्योंकि कमाना उसकी जरूरत थी न कि शौक।

उ०5. (क) उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुँह पर गंभीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी।

(ख) छोटा जादूगर अपनी बीमार माँ को छोड़कर घर से निकला था ताकि कुछ पैसे कमा ले अपनी माँ को पथ्य करे।

(ग) उस दिन कार्निवाल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी। बंदर घुड़कने लगा। गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। लड़के की वाच. ालता से ही अभिनय हो रहा था।

(घ) खेल-देखकर श्रीमती जी ने लड़के को 1 रुपया दिया।

(ङ) छोटा जादूगर अपना खेल दिखाकर अपनी झोंपड़ी में लेखक की मोटर

से गया। उसके बाद लेखक ने झोंपड़ी में देखा एक स्त्री चीथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।

(च) लेखक का अभिप्राय था कि एक छोटा सा बच्चा जिसके खेलने के दिन थे वह अपनी जीविका को पाने के लिए काम ढूँढ़ रहा था।

व्याकरण-बोध

उ०1.

सुरम्य	+ ता =	सुरम्यता	व्यग्र	+ ता =	व्यग्रता
वाचाल	+ ता =	वाचालता	निर्मल	+ ता =	निर्मलता
मानव	+ ता =	मानवता	आवश्यक	+ ता =	आवश्यकता

उ०2.

बिजली	= चपला	बोली	= भाषा
शाम	= सायं	प्रसन्न	= खुश
क्रोध	= गुस्सा	मित्र	= दोस्त
माँ	= माता	हाथ	= हस्त
गर्व	= अभिमान	उद्यान	= बाग

उ०3. मैंने पूछा, ''और उस परदे में क्या है? जहाँ तुम गए थे?'' ''नहीं, वहाँ मैं न जा सका। टिकट लगता है।'' मैंने कहा, ''तो चलो, मैं तुमको वहाँ लिवा ले चलूँ।'' मैंने मन-ही-मन कहा, ''भई, आज के तुम्हीं मित्र रहे।'' उसने कहा, ''वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए, निशाना लगाया जाए।''

उ०4. (क) भाग जाना

चोर पुलिस को देखकर नौ दो ग्यारह हो गए।

(ख) रो पड़ना

10 साल बाद अचानक अपनी माँ से मिलकर छोटे जादूगर की आँखों से आँसू निकल पड़े।

उ०5.

तिरस्कार	= सम्मान	विषाद	= आनंद
स्मरण	= भूल जाना	इच्छा	= अनिच्छा
संध्या	= प्रातः	स्वीकार	= अस्वीकार
बीमार	= स्वस्थ	प्रसन्नता	= अप्रसन्नता
मिठास	= खटास	समाप्त	= शुरूआत

अध्याय 14

जीव-जन्तुओं का हिसाब-किताब

पाठ-बोध

उ०1. (क) स्वयं करें।

(ख) ये पक्षी एक साथ झीलों पर पानी पीने आते हैं। जैसे– गौरैया, शुतुरमुर्ग, इमू, कीवी।

उ०2. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (i)

उ०3. (क) लेन-देन की (ख) झीलों, पानी

(ग) लाल तिलचट्टे (घ) सजातीय पक्षी को

(ङ) रोगी, घायल (च) रेखाओं

उ०4. (क) डॉ० सुर्बोल ग्रेगरी ने जब लोगों को चौंकाया उन्होंने सिद्ध किया है कि पक्षियों की लगभग कुल ढाई सौ जातियों में विकसित मानव जैसी बैंक प्रणाली तथा लेन-देन जैसी व्यवस्था पाई जाती है।

(ख) जाने-माने पक्षी फोटोग्राफर स्वर्गीय लोकबंधु के दर्जनों दुर्लभ चित्रों से भी डा० सुर्वोल ग्रेगरी की खोज की पुष्टि होती है।

(ग) पक्षी-विशेषज्ञ स्वर्गीय डा० सालिम अली ने भी पक्षियों की आदतों और व्यवहार में विलक्षणताओं की अनेक हैरतअंगेज बातों का लेखा-जोखा तैयार किया।

(घ) तुर्किस्तान, अफगानिस्तान तथा अन्य सुदूर देशों से प्रति वर्ष बीकानेर आने-जाने वाले पक्षियों में भी लेन-देन व्यवस्था पाई गई है।

(ङ) ये पक्षी एक साथ झीलों पर पानी पीने आते हैं। लेन-देन के मामले में जीव-जंतु, नर-मादा, लेन-देन करने वाले की आयु तथा उपार्जन-शक्ति का भी पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं। सूद-ब्याज तक वसूल किया जाता है।

(च) उधार लेने वाली गौरैया को सूद के रूप में डेढ़ गुना खाद्य-सामग्री सधन्यवाद वापस करनी पड़ती है।

(छ) कौए केवल उसी सजातीय पक्षी को उधार देते हैं जिससे वापसी की पूरी आशा हो। सुस्त, दुष्ट और बेईमान पक्षी को पास नहीं

फटकने दिया जाता। कौए रोटी, दूध, दही, मांस, रक्त, फल आदि उधार देते हैं। वसूली का समय दो से चार प्रतिशत सूद के आधार पर एकाध सप्ताह का होता है। माल वापस न मिलने पर क्रूरतापूर्वक हमलों के रूप में चेतावनी रूपी नोटिस दिया जाता है।

(ज) तोता व कबूतर वसूली के समय अपना असली रूप दिखाते हैं। तोता और कबूतर पहले तो जरूरतमंदों को फलों, खाद्य पदार्थों आदि के नमूने देकर अपने जाल में फँसाते हैं और फिर चुटकियों में दो सौ प्रतिशत सूद पर माल उधार दे देते हैं। इनकी वसूली की अवधि अनिश्चित है। ये ऋणी पक्षी की गतिविधियों पर पैनी नजर रखते हैं और उसके पास खाद्य-सामग्री आते ही उसे घेर लेते हैं।

(झ) निर्मम महाजनों के साथ यहाँ बतख व चील की तुलना की गई है।

(ञ) मुर्गे उधार में ईमानदारी तथा शुद्धता के लिए प्रसिद्ध हैं।

व्याकरण-बोध

उ०1.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
आस्ट्रेलिया	शोधकर्ता	ईमानदारी
डा० सुर्वोल	पक्षी विशेषज्ञ	शुद्धता
चमगादड़	मानव	शोषण
सारस	मनुष्य	निर्मम
कठफोड़वा	फोटोग्राफर	क्रूरतापूर्वक

उ०2.

	मूल शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
विलक्षणता	विलक्षण	–	ता
विकसित	विकास	–	इत
सजातीय	जातीय	स	–
निस्संदेह	संदेह	निः	–
ईमानदारी	ईमान	–	दारी
बाकायदा	बाकायदा	बा	–

उ०3. जीव–जन्तु विश्व–विख्यात
जीव–विज्ञान हिसाब–किताब
लेन–देन

उ०4. आश्चर्य – आश्चर्य की बात है कि कृष्णा को अपनी सफलता का नाममात्र भी घमण्ड नहीं है।

प्रकृति – प्रकृति हमें हमेशा देती है।

व्यवस्था – विद्यालय की व्यवस्था अध्यापक व शिष्य दोनों के हाथ में होती है।

अवधि – राम जी 14 वर्ष की अवधि तक वन में रहे।

अनिश्चित – आज भी वर्षा का आना अनिश्चित है।

खाद्य–सामग्री – आजकल खाद्य–सामग्री बहुत महंगी है।

भावनाएँ – हमें सबकी भावनाएँ समझनी चाहिए।

अध्याय 15

महान साहित्यकार-शरतचंद्र

पाठ-बोध

उ०1. (क) बसंतपुर गाँव में, लठैत नमन सरदार के साथ

(ख) प्रश्नों के उत्तर सुनकर परीक्षक शरत् की स्मरण शक्ति का लोहा मान गये।

(ग) उनका स्वभाव सबका मन मोह लेता था।

(घ) शरत्चंद्र का जन्म 1876 में बंगाल प्रांत के हुगली जिले के देवानंदपुर गाँव में हुआ था।

(ङ) 16 जनवरी, 1938 को जिगर के कैंसर के कारण।

उ०2. (क) (iii) (ख) (iii) (ग) (i)

उ०3. (क) सीधा, भोला (ख) डाकुओं (ग) स्कूल

(घ) साधू, मुजफ्फरपुर (ङ) प्रकाश, पूर्णचन्द्र

उ०4. (क) शरतचन्द्र बचपन में सीधे, शरारती व भोले थे। परन्तु वे अच्छे विद्यार्थी भी थे। जो पढ़ते वह दिल से पढ़ते। इसी के कारण देखते वे किताबें पढ़ना भी बहुत पसन्द करते थे। इन किताबों को पढ़कर नई-नई कहानियाँ गढ़ते। इसी प्रकार साधना करते-करते लिखना सीख गए तथा एक बड़े साधक थे।

(ख) शरतचन्द्र का हृदय बड़ा ही कोमल था वह जितना मनुष्यों के लिए करते उतना ही जानवरों के लिए हृदय में प्रेम रखते थे। सबका कष्ट देखकर उसको दूर करने का हर संभव प्रयास करते थे।

(ग) बंगाल की नारियों को बंगाल में पशु समान समझते थे। उन्होंने नारियों का अभिनंदन किया और उनकी विशेषताओं को समाज में उजाकर किया। इससे सभी नारियाँ प्रसन्न थीं और उनकी सत्तावनवीं (57) जन्मतिथि पर उनका अभिनन्दन किया।

उ०5. (क) लेखक ने बताया एक बार शरतचंद्र ने सुना कि बसंतपुर गाँव में मछली पकड़ने की बंसियाँ बड़ी अच्छी मिलती हैं। लेकिन वहाँ पहुँचा कैसे जाए? अकेले जाने की हिम्मत नहीं थी। अचानक पता लगा कि गाँव का लठैत नयन सरदार गाय खरीदने उसी गाँव जा

रहा है। चुपके से बिना किसी से कुछ कहे नयन सरदार के पीछे हो लिया। उन दिनों डाकुओं का बड़ा जोर था। अँधेरा हुआ नहीं कि रास्ते पर डाकू पड़े नहीं। लेकिन सरदार तो पक्का लठैत था, वह डाकुओं से क्यों डरता? अकेले ही बालक को लेकर लौट पड़ा। डाकुओं के एक दल ने उन्हें घेर लिया। ये लोग झाड़ियों के पीछे छिपे रहते थे और इनके पास बाँस के छोटे-छोटे पर भारी फावड़े होते थे। पैरों को निशाना बनाकर पीछे से फावड़ा दे मारते। चोट खाकर बेचारा पथिक गिर पड़ता और वे आकर लाठियों से मार-मारकर उसकी जान निकाल डालते। लेकिन नयन सरदार तो लठैत था न। आहट मिलते ही डाकुओं को ललकारा। आवाज सुनकर किसी की हिम्मत न हुई कि सामने आए।

(ख) एक था लड़का, शरारती, सीधा और भोला। इस गाँव से उस गाँव और गाँव भी क्यों, जी में आया तो शहर भी पहुँच जाया करता था। बचपन में बड़े शौक थे, मसलन मछलियाँ पकड़ता था, ति. तलियाँ भी पकड़ता था। इतनी दूर गुल्ली फेंकता कि बस पूछिए मत। लट्टू हाथ पर इस तरह घुमाता कि साथियों की आँखों के सामने धरती घूमने लगती।

(ग) पिता और शरत कहीं भी एक जगह ज्यादा समय नहीं टिकते थे। जब भी उनके पिता का ससुराल में अनादर होता तो पिताजी घर छोड़ थे परन्तु गुस्सा शांत होने पर फिर पहुँच जाते थे। ऐसे ही शरत चन्द्र थे।

(घ) कई महीने बाद साधु के वेश में वह मुजफ्फरपुर पहुँचे। यहाँ वह शीघ्र ही लोकप्रिय हो गए क्योंकि बाँसुरी बहुत सुंदर बजाते थे और खूब सेवा करते थे। वे रोगी जिनका कोई नहीं था, शरत् उनकी जी-जान से सेवा करते, जो असहाय व्यक्ति मर जाते उनका आदर के साथ संस्कार करते। यहीं पर उनका परिचय एक युवक जमींदार महादेव साहू से हुआ। कई महीने शान के साथ उनके पास रहे।

(ङ) इनके पड़ोस में आग लग गई। बर्मा में लकड़ी के मकान होते हैं। देखते-देखते इनका मकान भी जलने लगा। इनकी सभी वस्तुएँ,

पुस्तकालय, पांडुलिपियाँ जलकर राख हो गईं। लेकिन तभी पता लगा कि पड़ोसी का एक बकरी का बच्चा अंदर रह गया है। शरत् अपने प्राणों को संकट में डालकर अंदर गए और बच्चे को बाहर निकाल लाए। पशु-पक्षियों से यह इतना प्रेम करते थे कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

(च) 1921 से लेकर 1938 में अपनी मृत्यु तक वह हावड़ा काँग्रेस कमेटी के प्रधान रहे। वह मानते थे, 'राजनीति में योगदान देना सब देशवासियों का कर्तव्य है, विशेषकर हमारे देश में। राजनीतिक आंदोलन देश की मुक्ति का आंदोलन है। साहित्यकारों को इसमें सबसे आगे बढ़कर योग देना चाहिए।' अपने एक उपन्यास 'पथ के दावेदार' में उन्होंने क्रांतिकारियों के जीवन का चित्रण किया है।

(छ) शरत् का गृहस्थ जीवन बहुत सुखी था। उनकी पत्नी हिरण्यमयी देवी जिसे वह 'बहू' या 'बड़ी बहू' कहकर पुकारते थे, बहुत पति-परायणा थीं। वह बहुत सरल, व्रत-उपवास करने वाली तथा अतिथियों से प्रेम करने वाली हिंदू महिला थीं। वह सामताबेड़ में मकान बनाकर रहने लगे थे।

(ज) शरतचंद्र जैसे लेखक कभी नहीं मरते। उनका साहित्य अमर है, वह भी अमर हैं। उनकी रचनाओं को पढ़ते हुए हम और आप सदा उनको अपने हृदय में पाएँगे।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) चाँद पूरा कब निकलता है?

(ख) वह भाई के पास कब गई?

(ग) शरत् बचपन में कहाँ पढ़ते थे?

(घ) उस काल में नारी कैसी थी?

(ङ) शरत् का गृहस्थ जीवन कैसा था?

(च) कौन उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती?

उ०2. (क) बालक = मेरे घर एक बालिका खाना देने आई है।

(ख) माँ = पिताजी हमें प्रेम करते हैं।

(ग) अध्यापक= मेरी अध्यापिका मुझे बहुत प्यार करती है।

(घ) पड़ोसी = मेरी पड़ोसन हमेशा मेरी मदद करती है।

(ङ) लेखक = लेखिका ने बहुत सुन्दर नाटक लिखा है।

उ०3. (क) छुटपन में शरारत करने पर माँ उसे मारती थी।

(ख) शरत एक लेखक व स्वाधीनता संग्राम सेनानी थे।

(ग) भेलू बहुत बदसूरत व भौंकने वाला है।

(घ) उनके पड़ोस में आग लग गई और देखते-देखते उनका मकान भी जलने लगा।

(ङ) पिता को जब पता लगा तो वह नाराज हुए और घर से निकल जाने को कह दिया।

(च) इन कहानियों से उनकी धाक जम गई और सभी उनसे रचनाएँ माँगने लगे।

उ०6. (क) मार-मार = पुलिस ने चोर को मार-मारकर अधमरा कर दिया।

(ख) डरते-डरते = रात को डरते-डरते मैं दुकान तक गई।

(ग) रातों-रात = रातों-रात बड़ा आदमी बनना नामुमकिन है।

(घ) एक-एक = एक-एक करके घर के सब लोग पार्टी में चले गए।

(ङ) धीरे-धीरे = गाड़ी धीरे-धीरे व सावधानीपूर्वक चलानी चाहिए।

(च) छोटे-छोटे = मेरे दो छोटे-छोटे भाई हैं।

(छ) साथ-साथ = हमें साथ-साथ रहकर हर मुश्किल का सामना करना चाहिए।

(ज) दूर-दूर = योग सीखने के लिए दूर-दूर से लोग आज पतंजलि आये हैं।

(झ) देखते-देखते = देखते-देखते घर के बच्चे बड़े अफसर बन गये।

- नीचे कुछ अक्षर दिये गये हैं। उन्हें उलट-फेर कर देखें आप कितने शब्द बना सकते हैं। ध्यान रहे कि आपको पाँच, चार, तीन अक्षरों के शब्द बनाने हैं।

वि	रा	ई
म	वा	न
आ	तु	क
च	ज्ञा	ग

(1) चतुराई
(2) विज्ञान
(3) आज्ञा
(4) विराम
(5) कवि
(6) विवान
(7) आराम
(8) वाचक
(9) ईरान
(10) चमक

अध्याय 16

एकता का महत्व

पाठ-बोध

उ०1. (क) बंदर, मुर्गा तथा अमरूद का पेड़।

(ख) वे कसाई, चिडियाघर के लोग, फलवालों तथा स्कूल के बच्चों से एक-दूसरे को बचाते थे।

(ग) उन्होंने वर्षा तथा ओले पड़ने पर परेशान होने के कारण आपस में बोलना बंद कर दिया था।

(घ) 'बड़े दोस्त बने फिरते थे।'

उ०2. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०3. (क) सुनहरा मुर्गा (ख) काला (ग) चिड़ियाघर

(घ) अमरूद, लाल (ङ) फलवालों, स्कूल, लाल अमरूद

उ०4. (क) सुनहरा मुर्गा अपनी तरह का एक ही था। इसलिए बहुत-से लोगों की नजर उस पर थी। काला बंदर भी अपनी तरह का एक ही था। इसलिए चिड़ियाघर के लोग उसे पकड़ने की कोशिश में थे। लाल अमरूद के पेड़ पर लाल-लाल अमरूद लगते थे। उसके जैसा भी कोई दूसरा पेड़ वहाँ नहीं था।

(ख) जब कोई आदमी मुर्गे को पकड़ने के लिए आता, तो पेड़ उसे लुभाने के लिए दो-तीन पके अमरूद नीचे टपका देता। उन अमरूदों की खुशबू ही ऐसी थी कि वह पहले अमरूद चखने में लग जाता। उस बीच बंदर दो-एक कच्चे अमरूद तोड़कर इस तरह उसके सिर का निशाना बनाता कि कसाई अपना होश खो बैठता। आखिर जब वह ऊपर की तरफ देखता, तो बंदर मुर्गे को पीठ पर बिठाए मुँह बिचकाता नजर आता। वह हारकर वहाँ से चलने लगता।

(ग) जब चिड़ियाघर के लोग बंदर को घेरने के लिए आते, तब पेड़ उसे अपनी पत्तियों और शाखाओं में छिपा लेता। किसी की उस पर नजर नहीं पड़ती। नीचे मुर्गा जोर-जोर से पंख फड़फड़ाकर इतनी धूल उड़ा देता कि उनके लिए वहाँ खड़े होकर साँस लेना

मुश्किल हो जाता। आखिर वे वहाँ से हटने लगते, तो पेड़ अपने सबसे पिलपिले अमरूद नीचे टपकाकर उन्हें फिसला देता।

(घ) जब फलवाले या स्कूल के बच्चे पेड़ से अमरूद तोड़ने के लिए आते, तब पहले उनका सामना बंदर से होता। बंदर इस तरह उनके इर्द-गिर्द चक्कर काटता और उन्हें डराता कि उनका पेड़ के नजदीक जाने का हौसला ही न होता। अगर उन लोगों के पास अपना कोई खाने-पीने का सामान होता, तो उसे भी वह चट कर जाता। मौका लगने पर किसी के बाल नोच देता, किसी के कान उमेठ देता। इतने पर भी वे लोग पेड़ के नजदीक पहुँच जाते, तो वहाँ उन्हें मुर्गा बेजान-सा तड़पता नजर आता। मुर्गे की चोंच एक अमरूद में होती, जैसे कि अमरूद खाकर ही उसकी यह हालत हुई हो। लोग बीमारी के डर से अमरूद तोड़ने का इरादा छोड़कर वहाँ से लौट पड़ते।

(ङ) मूसलाधार बारिश होने पर पेड़ ने झल्लाकर सोचा, 'मैंने आज तक हर मुसीबत में इनकी जान बचाई है, पर आज मुझ पर इतनी बड़ी मुसीबत आई है, तो इन्हें अपनी-अपनी पड़ी है। ओलों से मेरे सभी फल नष्ट हुए जा रहे हैं, लेकिन इन्होंने मेरा हाल तक नहीं पूछा, मदद करना तो दूर रहा।' बंदर ने ठंड से काँपते हुए अपने आप से कहा, 'एक पेड़ है, जो जमीन में गड़ा होने की वजह से सुरक्षित है। दूसरा पक्षी है, जिसे आकाश में उड़ सकने के कारण कोई खतरा नहीं है। आज तक मुझसे ये अपनी रखवाली कराते रहे, पर आज मुझ पर इतनी सख्त मुसीबत पड़ी है, तो दोनों चुपचाप ताकते हुए मज़ा ले रहे हैं, कर कुछ नहीं रहे।'

'मुर्गे ने मन में कुड़बुड़ाना शुरू किया, 'मैं क्यों बेवकूफ बनकर इन दोनों के बीच फँसा हूँ? आज तक मैं तो इनकी हर मुसीबत को अपनी मुसीबत समझता आया हूँ। पर आज जब मेरी जान पर आ बनी है, तब दोनों को जैसे मेरा पता ही नहीं है; मज़े से बारिश में नहा रहे हैं और मेरी बात तक नहीं पूछ रहे।'

(च) कहानी के अंत में मुर्गा आदमी के थैले में बंद हो गया, अगले रोज़ चिड़ियाघर के लोग आए। उन्होंने बंदर को पकड़ने के लिए जाल बिछाया, थोड़ी देर में बंदर जाल में था और चिड़ियाघर के लोग उसे घसीटते हुए लिए जा रहे थे। उससे अगले रोज़ बहुत-से लोगों ने पेड़ को घेर लिया। पत्थरों और डंडों का कोई जवाब उसके पास नहीं है। थोड़ी ही देर में उसके सारे अमरूद झाड़ लिए गए। बस, उसी समय पेड़ की जड़ पर कुल्हाड़ी चलने लगी। थोड़ी देर में अमरूद टोकरियों में भरकर जा रहे थे और पेड़ की लकड़ियाँ लोगों के कंधों पर लदकर।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) घेरने के लिए – उद्देश्यवाचक क्रिया विशेषण
(ख) ज़ोर-ज़ोर – परिमाणवाचक क्रिया विशेषण
(ग) थोड़ी देर – कालवाचक क्रिया विशेषण
(घ) खूब – परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

उ०2.

पेड़ – तरु	वृक्ष	पादप
बंदर – वानर	कपि	मर्कट
जमीन – भूमि	भू	मिट्टी
आकाश – अंबर	गगन	नभ
गुस्सा – आवेश	क्रोध	कोप
आदमी – नर	पुरुष	मर्द
पत्थर – पाषाण	शिला	अश्म
दोस्त – मित्र	दोस्त	सखा

उ०3.

काला – गोरा	बच्चा –	बूढ़ा
खुशबू – बदबू	कच्चा –	पक्का
ऊँची – नीची	सिर –	पैर
दिन – रात	भारी –	हल्का
बेवकूफ – बुद्धिमान	दोस्त –	दुश्मन

उ०4. (क) योजना – कल सब बच्चों ने घूमने की योजना बनायी।
(ख) होश – होश में आने के बाद मुझे पता चला कि मैं बहुत बीमार थी।
(ग) मूसलाधार – रात मूसलाधार वर्षा हुई।
(घ) सन्निपात – बंदर को ठंड के कारण सन्निपात हो गया।
(ङ) लालच – लालच बुरी बला है।
(च) मुसीबत – मुसीबत में धैर्य से काम लेना चाहिए।

अध्याय 17

हॉकी का जादूगर

पाठ-बोध

उ०1. (क) मेजर ध्यानचंद

(ख) पंजाब रेजिमेंट तथा सैपर्स एंड माइनर्स

उ०2. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i)

उ०3. (क) पंजाब रेजिमेंट (ख) मत, बदला (ग) सफलता

(घ) फर्स्ट ब्रेहिमन, सिपाही (ङ)लांस नायक

(च) हॉकी का जादूगर (छ) हिटलर

उ०4. किसी भी खेल को जीतने के लिए खेल को खेलने की लगन होना, खेल को सीखने के लिए की गई दिन-रात की मेहनत अर्थात् साधना और खेल में खुद को, अपने देश को जीताने की भावना ही जीत का मूलमंत्र है।

उ०5. (क) माइनर्स टीम के खिलाड़ी उनसे गेंद छीनने की कोशिश करते, लेकिन उनकी हर कोशिश बेकार जाती। इतने में एक खिलाड़ी ने गुस्से में आकर हॉकी मेरे सिर पर दे मारी।

(ख) मैंने एक के बाद एक झटपट छह गोल कर दिए।

(ग) लगन, साधना और खेल-भावना यही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं।

(घ) बर्लिन ओलंपिक में लोग उनके हॉकी खेलने के ढंग से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उन्हें 'हॉकी का जादूगर' कहना शुरू कर दिया।

(ङ) हिटलर के संबंध में लेखक ने बताया कि हिटलर ने अपने किसी अधिकारी से पूछा था कि यह खिलाड़ी भारतीय सेना में किस पद पर है। जब उसे यह मालूम हुआ कि मैं लांस नायक हूँ तो उसने अपने उस अधिकारी से कहा कि उससे कहो कि वह जर्मनी में आ जाए, मैं उसे मार्शल बना दूँगा।

(च) खेलते समय मैं हमेशा इस बात का ध्यान रखता था कि हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।

व्याकरण-बोध

उ०1.

अक्षि	आँख	एकत्र	इकट्ठा
काक	कौआ	कार्य	काम
कोकिल	कोयल	कोष्ठ	कोठी
ग्राहक	गाहक	ग्राम	गाँव
चंद्रिका	चाँदनी	ज्येष्ठ	बड़ा
उत्थान	उठना	कर्ण	कान
कर्पूर	कपूर	कुक्कुर	कुत्ता
गृह	घर	कूप	कुँआ
गर्दभ	गधा	चर्म	चमड़ी
छत्र	छाता	दश	दस
उच्च	ऊँचा	घृत	घी
काष्ठ	लकड़ी	कर्म	काम
जिह्वा	जीभ	चंद्र	चाँद

उ०2.

दिन	=	रात	जीवन	=	मरण
बाहर	=	अन्दर	सिर	=	पैर
बुरा	=	अच्छा	रात्रि	=	दिन
सफलता	=	असफलता	साधारण	=	विशेष

उ०3.

घटनाएँ = लापरवाही से ही इतनी सड़क घटनाएं बढ़ रही हैं।
जीवन = जीवन में सुख-दुख तो आता ही रहता है।
दिलचस्प= जीवन का हर पहलू दिलचस्प होता है।
चिंता = चिंता चिता के समान है।
सफलता = सफलता केवल मेहनत करने वालों को मिलती है।
मंत्र = सफलता का एकमात्र मंत्र मेहनत है।
गौरव = देश पर जान-न्यौछावर करने का गौरव सबको नहीं मिलता।
क्षण = जीवन क्षण भंगुर है।

अध्याय 18
प्रायश्चित

पाठ-बोध

उ०1. (क) भगवतीचरण वर्मा।
(ख) रामू की बहु का।
(ग) कबरी बिल्ली से।
(घ) रामू की बहु से कबरी बिल्ली मर गई।
(ङ) बिल्ली उठकर भाग गई।

उ०2. (क) (iii) (ख) (ii)

उ०3. (क) 14 वर्ष (ख) खाना-पीना
(ग) पंजा, कटोरा झनझनाहट (घ) प्रायश्चित (ङ) बिल्ली

उ०4. (क) बहू चौदह वर्ष की बालिका थी, कभी भंडार घर खुला है, तो कभी भंडार घर में बैठे-बैठे सो गई। कबरी बिल्ली को मौका मिला, घी-दूध पर वह जुट गई। रामू की बहू हांडी में घी रखते-रखते ऊँघ गई और बचा हुआ घी कबरी के पेट में। रामू की बहू दूध ढककर मिसरानी को जिंस देने गई और दूध नदारद। अगर बात यहीं तक रह जाती तो भी बुरा न था। कबरी बिल्ली रामू की बहू को कुछ ऐसा परख गई थी कि रामू की बहू के लिए खाना-पीना दुश्वार। रामू की बहू के कमरे में खीर से भरी कटोरी पहुँची और रामू जब तक जाए, तब तक कटोरी साफ चटी हुई। बाजार से मलाई आई और जब तक रामू की बहू ने पान लगाया, मलाई गायब।

(ख) रामू को रूखा-सूखा भोजन मिलता था, क्योंकि रामू के लिए आता दूध-मलाई कबरी बिल्ली चट कर जाती थी।

(ग) कबरी बिल्ली से पीछा छुड़ाने के लिए बिल्ली फँसाने का कठघरा आया, उसमें दूध, मलाई, चूहे तथा बिल्ली को स्वादिष्ट लगने वाले विविध प्रकार के व्यंजन रखे गए, लेकिन बिल्ली ने उधार निगाह तक न डाली।

(घ) रामू के पड़ोस की औरतों का ताँता बँध गया क्योंकि रामू की बहू के हाथ से बिल्ली की हत्या हो गई थी।

(ङ) पंडित परमसुख चौबे छोटे-से, मोटे-से आदमी थे। लंबाई चार फीट दस इंच और तोंद का घेरा अट्ठावन इंच। चेहरा गोल-मटोल, बड़ी-बड़ी मूँछें, रंग गोरा, गोखुरी चोटी कमर तक पहुँची हुई।

(च) पंडित जी ने प्रायश्चित का विधान बताया एक सोने की बिल्ली बनवाकर बहू से दान करवा दी जाए। जब तक बिल्ली न दे दी जाएगी, तब तक तो घर अपवित्र रहेगा। बिल्ली दान कर देने के बाद इक्कीस दिन का पाठ हो जाए।

(छ) महरी ने लड़खड़ाते स्वर में कहा– ''माँ जी, बिल्ली तो उठकर भाग गई।''

(ज) प्रस्तुत कहानी में लेखक भगवतीचरण वर्मा ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास एवं रूढ़िवादिता पर करारा प्रहार किया है। यह कहानी अंधविश्वास एवं पाखंड से दूर रहने की शिक्षा प्रदान करती है।

व्याकरण-बोध

उ०1. विलोम शब्द युग्म : दिन-रात

मेरे पिताजी ने मुझे अफ़सर बनाने के लिए दिन-रात एक कर दिया।

सार्थक व निरर्थक शब्द : चुप-चाप

जब पिताजी को गुस्सा आता है तो सब चुप-चाप खड़े हो जाते हैं।

मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द : मोटा-ताजा

मेरे घर में एक मोटा-ताजा चूहा है।

उ०2. (क) प्रायश्चित = कुछ गलतियों के लिए प्रायश्चित काफी नहीं है।

(ख) घृणा = गरीब से नहीं गरीबी से घृणा करनी चाहिए।

(ग) अपराधिनी = उसकी माँ को गरीबी ने अपराधिनी बना दिया।

(घ) छक्के-पंजे = बहु की लापरवाही के कारण बिल्ली के छक्के-पंजे हो रहे थे।

(ङ) बालिका = बालिका-विवाह एक कुप्रथा थी।

(च) मुश्किल = मुश्किल का सामना करने पर सफलता मिलती है।

(छ) विविध = मेले में विविध प्रकार के खेल-खिलौने मिलते हैं।

अध्याय 19
पंच परमेश्वर

पाठ-बोध

उ०1. (क) अपने साथ हुए धोखे के लिए।

(ख) जुम्मन पंचायत करने के प्रस्ताव से प्रसन्न हुआ क्योंकि उसे लगा कि कोई उसके विरूद्ध नहीं जायेगा।

(ग) मित्रता की मुरझाई लता फिर से हरी हो गई क्योंकि उनके मतभेद खत्म हो गये थे।

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (i)

उ०3. (क) अलगू व जुम्मन में घनिष्ठ मित्रता थी।

(ख) खालाजान जुम्मन शेख की एक बूढ़ी खाला थीं। जब तक दान-पत्र की रजिस्ट्री न हुई थी तब तक खालाजान का खूब आदर-सत्कार किया गया। पर रजिस्ट्री की मुहर ने इन खातिरदारियों पर भी मानो मुहर लगा दी। जुम्मन की पत्नी करीमन रोटियों के साथ कड़वी बातों के कुछ तेज, तीखे सालन भी देने लगी।

(ग) खालाजान से न सहा गया, तब जुम्मन से शिकायत की। जुम्मन से कहा– बेटा! तुम्हारे साथ मेरा निर्वाह न होगा। तुम मुझे रुपये दे दिया करो, मैं अपना पका-खा लूँगी। जुम्मन ने धृष्टता के साथ उत्तर दिया– रुपये क्या यहाँ फलते हैं?

खाला ने नम्रता से कहा मुझे भी कुछ रूखा-सूखा चाहिए कि नहीं?

जुम्मन ने गंभीर स्वर से जवाब दिया– तो कोई यह थोड़े ही समझा था कि तुम मौत से लड़कर आई हो। खाला बिगड़ गईं, उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी।

(घ) जुम्मन ने पंचायत से कहा खालाजान मुझसे माहवार खर्च माँगती हैं। जायदाद जितनी है, वह पंचों से छिपी नहीं। उससे इतना मुनाफा नहीं होता है कि माहवार खर्च दे सकूँ। इसके अलावा समझौते में माहवार खर्च का कोई जिक्र नहीं। नहीं तो मैं भूलकर

भी इस झमेले में न पड़ता। बस, मुझे यही कहना है। आइंदा पंचों को अधिकार है, जो फैसला चाहें करें।

(ङ) अलगू का फैसला सुनकर जुम्मन सन्नाटे में आ गया क्योंकि अलगू ने फैसला किया कि खालाजान को माहवार खर्च दिया जाए। खाला की जायदाद से इतना मुनाफा अवश्य होता है कि माहवार खर्च दिया जा सके। यह फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गए। उसको लगा जिस पर पूरा भरोसा था, उसने समय पड़ने पर धोखा दिया।

(च) अलगू और समझू के बीच झगड़े का कारण था पंचायत का जुम्मन के खिलाफ किया गया फैसला।

(छ) अलगू और जुम्मन के संबंध अच्छे न थे, फिर भी जुम्मन ने अलगू के पक्ष में फैसला सुनाया। क्योंकि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता और इस बार अलगू सही था।

व्याकरण-बोध

उ०1.

निर्णय		करना	सहन		करना
नाम		होना	दर्शन		होना
चिंता		करना	नाश		करना

उ०2.

आर्य	=	अनार्य	निद्रा	=	अनिद्रा
उत्साह	=	अनुत्साह	पूर्ण	=	अपूर्ण
द्वितीय	=	अद्वितीय	परिचित	=	अपरिचित

उ०3. (क) लाठी-पटकना – गुस्सा करना

खाला लाठी पटकर जुम्मन से पंचायत में आने के लिए कहने लगी।

(ख) सिर माथे चढ़ाना – मानना

खाला ने सबकी बात सिर-माथे रखी।

(ग) दिन-रात का रोना – दुखी रहना

जुम्मन ने खाला को दिन-रात रूला रखा था।

(घ) कन्नी काटना – किनारा करना
सरपंच बनने से सब कन्नी काट रहे थे।

(ङ) पौ फटना – जल्दी सुबह
खाला पौ फटते ही पंचायत की ओर चली।

(च) काया पलट होना – पूर्ण रूप से बदलना
अलगू जब पंच बना तो उसकी काया पटल गई।

उ०4. मीत्रता = मित्रता शीक्षा = शिक्षा
नीरवाह = निर्वाह सिकारी = शिकारी
दबरार = दरबार जीक्र = जिक्र

उ०5. मित्रता = मित्रता सदैव निभानी चाहिए।
सरपंच = अलगू गाँव की पंचायत में सरपंच चुना गया।
संपत्ति = जुम्मन ने खाला की संपत्ति ले ली।
पंचायत = पंचायत का फैसला सबको मानना पड़ता है।
वैमनस्य = आपस में वैमनस्य का भाव रखना अच्छी बात नहीं है।
तकलीफ = खालाजान बहुत तकलीफ से गुजर रही थीं।
कचहरी = खाला को कचहरी तक के चक्कर लगाने पड़े।
नीतिसंगत = पंचायत ने नीतिसंगत व्यवहार किया।
दगाबाजी = अलगू को लगा जुम्मन ने उसके साथ दगाबाजी की है।
चुनाव = खाला ने अलगू का चुनाव किया।
मित्र = अलगू और जुम्मन मित्र थे।

अध्याय 20
अजंता की चित्रकला

पाठ-बोध

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०3. (क) महाराष्ट्र (ख) अपूर्व (ग) भिक्षुओं
(घ) दीवार (ङ) सूर्य (च) नीलकमल

उ०4. (क) अजन्ता की गुफाएँ महाराष्ट्र प्रदेश में हैं।

(ख) जलगाँव, औरंगाबाद तथा पहूर इन तीन रेलवे स्टेशनों में से किसी एक पर उतरकर अजंता पहुँचा जा सकता है। इन स्टेशनों से फरदापुर नामक ग्राम तक जाना होता है।

(ग) स्तूप गुफा सबसे बड़ी है और उसका द्वार बड़ा ही भव्य है।

(घ) अजंता के चित्र-निर्माण की विधि संक्षेप में इस प्रकार थी : दीवार में जहाँ चित्रण करना होता था, वहाँ का पत्थर टपर कर खुरदरा बना दिया जाता था जिस पर गोबर, पत्थर का चूना और कभी-कभी धान की भूसी मिले हुए गारे का लेबा चढ़ाया जाता था। यह लेबा चूने के पतले पलस्तर से ढका जाता था और इस पर जमीन बाँधकर लाल रंग की रेखाओं से चित्र टीपे जाते थे, जिनमें बाद में रंग भरा जाता था। रंगों की योजना प्रसंगानुकूल चित्ताकर्षक है। आवश्यकतानुसार उनमें विविधता भी है। यथोचित हलका साया लगाकर चित्रों के अवयवों में गोलाई, उभार और गहराई दिखाई गई है। हाथ की मुद्राओं से, आँख की चितवनों से और अंगों की लोच आदि से बहुत-से भाव व्यक्त हो जाते हैं।

(ङ) पहली गुफा के दालान की समूची दीवार पर लगभग साढ़े तीन मीटर ऊँचा और ढाई मीटर चौड़ा मार-विजय का चित्र अंकित है।

(च) सत्रहवीं गुफा में माता-पुत्र का प्रसिद्ध चित्र है।

व्याकरण-बोध

उ०2. अ+लौकिक = अलौकिक अ+सफलता = असफलता
अ+प्रतिम = अप्रतिम अ+ज्ञात = अज्ञात
अ+हित = अहित अ+पूर्व = अपूर्व

उ०3.	ऊँचा	=	नीचा	पवित्र	=	अपवित्र
	उपस्थित	=	अनुपस्थित	लौकिक	=	अलौकिक
	धरती	=	आकाश	कोमल	=	कठोर
	विशाल	=	सूक्ष्म	कुशलता	=	अकुशलता
उ०4.	गुफा	=	गुफाएँ	सिर	=	सिरे
	पक्षी	=	पक्षियों	किरण	=	किरणें
	रेखा	=	रेखाएँ	पहाड़	=	पहाड़ों
	परिवार	=	परिवारों	मूर्ति	=	मूर्तियाँ

उ०5. (क) मेला = आज गाँव में मेला लगा है।

(ख) मोह = आकर्षक झूलों ने सबका मन मोह लिया।

(ग) लगन = लगन से किया गया कार्य सफलता प्रदान करता है।

(घ) चकित = गुफाओं के चित्रों को देखकर पर्यटक चकित हो जाते हैं।

(ङ) उत्कृष्ट = अजंता की गुफाओं में कला का उत्कृष्ट नमूना देखने को मिलता है।